Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 02, April-June 2025, pp. 113-119

21वीं सदी में गांधीवादी संचार की भूमिकाः डिजिटल युग में सत्य, संवाद और नैतिकता की पुनर्परिभाषा

अनुरंजन झा*
डॉ. शिल्पा गोयल**
डॉ. रितु शर्मा***

सार

यह शोध आलेख महात्मा गांधी के संवाद दर्शन की 21वीं सदी में प्रासंगिकता की विवेचना करता है। आज का संचार तकनीक आधारित, तीव्र और वैश्विक है, किंतु उसमें मूल्य, संयम और करुणा का अभाव स्पष्ट है। सोशल मीडिया, राजनीतिक प्रचार और जन–संचार माध्यमों में जो संवाद उपस्थित है, वह प्रायः एकतरफा, आक्रामक और प्रचार–केंद्रित है। इस संदर्भ में गांधीवादी संवाद का नैतिक दृष्टिकोण – जो सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित है – आज और अधिक आवश्यक बन गया है। यह आलेख डिजिटल युग की चुनौतियों के बीच गांधीवादी संवाद को व्यवहारिक विकल्प के रूप में प्रस्तुत करता है।

शब्दकोशः *गांधीवादी संचार, संवाद नैतिकता, डिजिटल सत्याग्रह, फेक न्यूज़, ट्रोल संस्कृति, नई तालीम, मीडिया नैतिकता, वैश्विक नेतृत्व।*

प्रस्तावना

भूमिकाः 21वीं सदी का संचार संकट और गांधीवादी संवाद की ज़रूरत

21वीं सदी की सबसे बड़ी उपलब्धियों में संचार माध्यमों की क्रांति को रखा जा सकता है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मेटावर्स और अन्य प्लेटफॉर्म ने संवाद को न केवल तीव्र, बल्कि अत्यंत व्यापक और प्रभावशाली बना दिया है। किंतु प्रश्न यह हैः क्या संवाद गहरा भी हुआ है?

संचार अब इतना त्वरित हो गया है कि सोचने, समझने और आत्म–मंथन का स्थान धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है। ऐसे में महात्मा गांधी का संवाद दर्शन – जो मूलतः आत्मसंयम, सत्य और करुणा पर आधारित था – आज के संचार युग में नैतिक सन्तुलन का प्रस्ताव करता है।

- **तकनीकी विकास बनाम नैतिक अधोपतन**

आज का संवादः

- सूचना–प्रधान है, पर अंतर्दृष्टिहीन
- वैश्विक है, पर आत्महीन
- तेज़ है, पर टिकाऊ नहीं

* शोधार्थी, इतिहास, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।
** सहायक प्रोफेसर, मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं ललित कला संकाय, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।
*** सहायक प्रोफेसर, मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं ललित कला संकाय, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।

AI आधारित चैटबॉट्स से लेकर वायरल मीम्स और हेट स्पीच तक, हम ऐसी दुनिया में संवाद कर रहे हैं जहां शोर अधिक है, और सन्नाटा भीतर। ऐसे में गांधी का संवाद दर्शन, जो करुणा, आत्मसंयम और सत्य पर आधारित था, एक वैकल्पिक दृष्टि के रूप में हमारे सामने है – जो संवाद को केवल माध्यम नहीं, मूल्य मानता है।

गांधी का संवाद दर्शनः आत्मा की आवाज़

गांधी ने संवाद को केवल सूचना का आदान–प्रदान नहीं माना, बल्कि आत्मा की जागरूकता का साधन माना। उनके संवाद की विशेषताएं थीं:

- **सत्य की खोजः** गांधी के लिए संवाद सत्य के निकट जाने का प्रयास था।
- **विनम्रता और सहमत–असहमति का सम्मानः** वे आलोचना को संवाद का हिस्सा मानते थे।
- **आत्मसंयम और मौन की भूमिकाः** वे कभी–कभी मौन को भी संवाद का हिस्सा मानते थे।
- **जनता की सहभागिताः** संवाद एकतरफा नहीं होता; श्रोता भी उतना ही ज़रूरी होता है।

उन्होंने कहा था **"यदि मैं अपने आलोचकों का उत्तर देना बंद कर दूँ, तो मेरा विकास रुक जाएगा।"** – यंग इंडिया, 1925

"यह वाक्य आज की 'कैंसल संस्कृति' (Cancel Culture) और 'प्रतिध्वनि कक्ष' (Echo Chambers) जैसी डिजिटल प्रवृत्तियों को आईना दिखाता है, जहाँ असहमति को सहन नहीं किया जाता और केवल अपनी मान्यताओं की पुष्टि करने वाले विचारों को ही सुना और साझा किया जाता है।"

आज का संवादः गति के पीछे गिरती गरिमा

- **संवाद की ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति**

सोशल मीडिया, जो कभी "नागरिक सशक्तिकरण" का उपकरण माना गया था, अब ट्रोलिंग, फेक न्यूज़, और गुटबंदी का अड्डा बनता जा रहा है। किसी भी विरोध या आलोचना को देशद्रोह या व्यक्तिगत हमला माना जाने लगा है।

डिजिटल एल्गोरिद्म उन विचारों को ही हमारे सामने लाते हैं जिनसे हम सहमत हैं, जिससे संवाद एक "प्रतिध्वनि कक्ष" बन जाता है – जहाँ हम केवल वही सुनते हैं जो हम पहले से मानते हैं। गांधी इसके ठीक उलट सोचते थे – वे असहमति को सुनते थे, समझते थे, और उस पर प्रतिक्रिया भी देते थे।

- **विज्ञापनमूलक संवाद का बोलबाला**

आज राजनीतिक दल, कॉर्पोरेट कंपनियाँ और यहां तक कि व्यक्तिगत ब्रांड भी संवाद को विज्ञापन में बदल चुके हैं। हर वक्तव्य 'इमेज' को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है। गांधी का संवाद विपरीत था – उसमें जोखिम था, आत्मनिरीक्षण था, और जनता को नारा नहीं, आत्मा की आवाज़ सुनाई देती थी।

- **गांधी और संवाद की नैतिक पुनर्रचना**

महात्मा गांधी का संवाद दर्शन इस संकट की घड़ी में एक गहन मूल्य–आधारित विकल्प प्रस्तुत करता है। उनका संवादः

  - विरोध में भी सौजन्य से भरा होता था
  - सत्य की खोज में आत्मालोचन करता था
  - और श्रोता को सहचर मानता था, शत्रु नहीं

गांधी संवाद में 'विजय' नहीं, 'समझदारी' चाहते थे।

उदाहरणः 'हरिजन' में आलोचनाओं का उत्तर

गांधीजी अक्सर 'हरिजन' में अपने आलोचकों के पत्र छापते थे और उनका उत्तर भी देते थे – बिना तर्क से भागे, बिना प्रतिशोध के। उन्होंने संवाद को 'आत्मसुधार' का मंच माना।

गांधी के संवाद सिद्धांत और डिजिटल युग की चुनौतियाँ

21वीं सदी का संचार संकट केवल तकनीकी नहीं, मूलतः नैतिक है। संवाद अब सूचना, प्रचार, या मनोरंजन के लिए है – पर क्या वह अभी भी सत्य की खोज, आत्मनिरीक्षण और सामाजिक पुनर्रचना का माध्यम है?

यह वही समय है जब महात्मा गांधी का संवाद–सिद्धांत हमें इस प्रश्न का उत्तर खोजने का निमंत्रण देता है।

गांधी के संवाद सिद्धांत के पाँच स्तंभ

गांधी ने अपने जीवन, लेखन और आंदोलनों में संवाद के कुछ मूल सिद्धांतों को व्यवहार में उतारा – जो आज के 'डिजिटल अनैतिकता' के विरुद्ध एक नैतिक फ्रेमवर्क प्रस्तुत करते हैं। ये पाँच स्तंभ हैं:

- **सत्यः संवाद का अंतिम उद्देश्य**

गांधी के लिए सत्य केवल सूचना नहीं था, बल्कि अनुभव और नैतिक विवेक से निकली वास्तविकता थी। उन्होंने संवाद को सत्य के अनावरण का मार्ग माना, जिसमें वक्ता स्वयं को भी जांचता है।

"सत्य ही ईश्वर है।"

– गांधी, यंग इंडिया

आज, जब 'पोस्ट–ट्रुथ' युग में भावनाएं तथ्यों से ऊपर रखी जा रही हैं, यह विचार विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है।

- **अहिंसाः विचारों की शुचिता**

गांधी का संवाद विरोध में भी गरिमा रखता था। उन्होंने कभी कटाक्ष, तिरस्कार या व्यंग्य को संवाद का हिस्सा नहीं बनने दिया। उन्होंने संवाद को एक ऐसा पुल माना जो विचारों के बीच अहिंसक सेतु बनाए।

- **आत्मसंयमः प्रतिक्रिया में विवेक**

गांधी कहते थे कि संवाद उतना ही बोलना है, जितना आवश्यक हो – और उतने ही संयम से। वे चुप रहने को भी संवाद मानते थे। "आज की तत्काल आक्रोश संस्कृति (instant outrage culture) में संवाद का स्थान भावनात्मक उन्माद ने ले लिया है, जहाँ लोग विचारों को समझने से पहले उन्हें खारिज कर देते हैं।" वहां गांधी का यह दृष्टिकोण आत्मनियंत्रण की मिसाल है।

- **सार्वजनिक उत्तरदायित्व**

गांधी संवाद को एक नैतिक उत्तरदायित्व मानते थे – न कि केवल व्यक्तिगत राय या प्रचार का ज़रिया। उन्होंने संवाद को समाज के प्रति जवाबदेही से जोड़ा। जब वे कोई वक्तव्य देते, तो सोचते थे कि उसका जनमानस पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

- **विनम्रता और सहमति–असहमति का सम्मान**

गांधी का संवाद कभी भी विरोधी को 'शत्रु' नहीं मानता था। उन्होंने अपने सबसे तीखे आलोचकों (जैसे डॉ. अंबेडकर या सुभाष चंद्र बोस) के साथ भी गरिमापूर्ण पत्राचार किया। उनका संवाद लोकतांत्रिक चेतना का आदर्श था।

डिजिटल युग की संचार चुनौतियाँ

अब आइए देखें कि 21वीं सदी के डिजिटल परिवेश में संवाद किस प्रकार संकटग्रस्त हो गया है, और गांधीवादी मॉडल इसके समाधान कैसे सुझा सकता है।

फेक न्यूज़ और 'पोस्ट–ट्रुथ' की संस्कृति

पोस्ट–ट्रुथ का अर्थ है – जब तथ्य कम, और भावनात्मक आस्थाएँ संवाद को अधिक संचालित करती हैं।

यूनेस्को (2021) की रिपोर्ट कहती है कि दुनिया में 60 प्रतिशत से अधिक ऑनलाइन उपयोगकर्ता कम–से–कम एक बार फेक न्यूज़ साझा कर चुके हैं।

आज जब ChatGPT, DALL·E, और कममचामि जैसी तकनीकें सच और झूठ को एक जैसे दिखा सकती हैं – तब गांधी का यह विचार उपयोगी हो उठता है:

"सत्य अकेले ही खड़ा रह सकता है, झूठ को समर्थन की आवश्यकता होती है।"

गांधी के अनुसार, संवाद का उद्देश्य "प्रकाश फैलाना" होना चाहिए, न कि "धुआं बनाना।"

ट्रोल संस्कृति और संवाद की गिरावट

आज ऑनलाइन संवाद में 'ट्रोलिंग', 'शेमिंग', और 'डॉक्सिंग' आम हैं। असहमति पर व्यक्ति विशेष को गाली, धमकी और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। यह संवाद नहीं, दमन है।

गांधी जब आलोचना झेलते थे, तब भी वे संवाद बंद नहीं करते थे। हरिजन में वे अपने आलोचकों के पत्र प्रकाशित कर उनका उत्तर देते थे।

"मैं संवाद से डरता नहीं, मैं अपमानित करने से डरता हूँ।"

– गांधी का संवाद दर्शन

डिजिटल असहमति और 'Echo Chambers'

सोशल मीडिया एल्गोरिद्म केवल वैसा ही कंटेंट दिखाता है जिससे आप पहले से सहमत हों। इससे संवाद 'प्रतिध्वनि कक्ष' (Echo Chambers) में बदल जाता है – जहाँ बहस नहीं होती, केवल सहमति की पुष्टि होती है।

गांधी ऐसी सीमाओं को तोड़ने वाले संवादकर्मी थे। उन्होंने स्वयं अपने विचारों को बदला, जैसे – अस्पृश्यता पर उनका रवैया 1920 से 1934 के बीच काफी बदल गया।

"मैं परिवर्तन से डरता नहीं, अगर वह मुझे सत्य के करीब लाए।"

संवाद की गति, पर गहराई की अनुपस्थिति

आज व्हाट्सएप, ट्वीटर यानी X और इन्स्टाग्राम जैसे माध्यमों ने संवाद को 'रिएक्शन' में बदल दिया है। संवाद के लिए समय नहीं, केवल इमोजी हैं।

गांधी अपने पत्रों में लंबा लिखते थे, कभी–कभी प्रतीक्षा करते थे, उत्तर सोच–समझकर देते थे। उन्होंने संवाद में ठहराव और आत्मनिरीक्षण को आवश्यक बताया।

उपसंहारः संवाद की पुनर्परिभाषा की आवश्यकता

आज के युग में, जहाँ शब्द 'हथियार' बन चुके हैं और संवाद 'रणनीति', वहां गांधी का संवाद हमें सिखाता है कि –

- संवाद गूंज नहीं, अनुभव हो
- संवाद वर्चस्व नहीं, संवाद–सम्मति हो
- संवाद केवल तेज़ नहीं, टिकाऊ हो

मीडिया और वैश्विक जनसंचार में गांधीवादी नैतिकता और डिजिटल सत्याग्रह

महात्मा गांधी ने जनसंचार को केवल सूचना का स्रोत नहीं, बल्कि जन–चेतना का साधन माना। उन्होंने प्रिंट मीडिया का प्रयोग एक ऐसे नैतिक मंच की तरह किया, जहाँ जन–आवाज को स्वर और समाज को दिशा

मिल सके। 21वीं सदी में जब मीडिया और संचार माध्यम कॉर्पोरेट दबावों, राजनीतिक ध्रुवीकरण और डिजिटल सनसनीखेज़ी से ग्रस्त हैं – गांधीवादी दृष्टिकोण पुनः मूल्यवान हो जाता है।

गांधी और मीडियाः संवाद की नैतिक पुनर्परिभाषा

गांधी स्वयं पत्रकार थे – उन्होंने नवजीवन, यंग इंडिया, और हरिजन जैसे पत्रों का संपादन किया, जिनमें उन्होंने न केवल अपने विचार रखे, बल्कि असहमतियों को स्थान भी दिया।

- **संवाद का चरित्रः आत्म–मंथन और आत्म–शोधन**

गांधी ने लिखाः **"मेरे जीवन का संदेश ही मेरा जीवन है।"** – *हरिजन, 1938*

इस कथन का आशय था – संवाद केवल भाषण नहीं, आचरण का प्रतिबिंब है। उन्होंने स्वयं अपनी आलोचना को जगह दी, अपनी भूलों को स्वीकार किया, और संवाद को एक सत्य यात्रा के रूप में जिया।

- **पत्रकारिता की भूमिकाः सेवा, न कि सनसनी**

गांधी का मानना था कि प्रेस का उद्देश्य "जनमत निर्माण" है, न कि "जन भावना का दोहन।" उन्होंने कहाः

"पत्रकारिता वह कार्य है जिसमें सेवा की भावना सर्वोपरि होनी चाहिए, न कि लाभ की।"

उनका यह कथन आज के मीडिया की टीआरपी–संचालित संरचना के लिए एक नैतिक चुनौती है।

21वीं सदी का मीडियाः नैतिक दिशा से विचलन

आज का मुख्यधारा मीडिया कई स्तरों पर गांधीवादी संवाद की भावना से भटक चुका हैः

- राजनीतिक एजेंडा आधारित रिपोर्टिंग
- स्टूडियो डिबेट में चीख़–चिल्लाहट
- टिकाऊ संवाद के बजाय 'Breaking News' की होड़
- संवेदनशील मामलों को TRP के लिए भुनाना

आज पत्रकारिता में संवाद का स्थान 'वक्तव्य–प्रतिवक्त्य' ने ले लिया है। ऐसा संवाद न जन को जोड़ता है, न समझ को विकसित करता है।

डिजिटल सत्याग्रहः 21वीं सदी का गांधीवादी प्रयोग

हाल के वर्षों में कुछ ऐसे डिजिटल जनांदोलन हुए हैं जिनमें गांधीवादी संवाद शैली पुनः जीवंत हुई है। यह डिजिटल सत्याग्रह का स्वरूप है – जिसमें संवाद करुणा, रचनात्मकता और आत्मबल के माध्यम से प्रतिरोध करता है।

- **किसान आंदोलन (2020–21)**

भारतीय किसानों द्वारा चलाया गया यह आंदोलन संवाद की दृष्टि से महत्वपूर्ण थाः

  - प्रतिरोध की भाषा में आक्रोश नहीं, बल्कि गरिमा थी।
  - गीतों, कविताओं, सांस्कृतिक प्रतीकों और शांतिपूर्ण मार्च द्वारा संवाद हुआ।
  - नेताओं और मीडिया से भिन्न मत होने पर भी हिंसक प्रतिक्रिया नहीं हुई।

यह गांधीवादी संवाद का डिजिटल रूप था – सत्याग्रह का एक समकालीन संस्करण।

- **#MeToo आंदोलन**

हालांकि यह आंदोलन पूरी तरह अहिंसक या समरूप नहीं था, परंतु इसमें संवाद की करुणा और गरिमा का महत्वपूर्ण स्थान थाः

- पीड़ित महिलाओं ने अपनी बात रखने के लिए सोशल मीडिया को संवाद का माध्यम बनाया।
- वे गुस्से में नहीं, आत्मसम्मान में संवाद कर रही थीं।
- समाज की चुप्पी को संवाद में बदला गया।

यह आंदोलन 'संवेदना आधारित संवाद' का उदाहरण है – जिसमें भाषा, अनुभव और सत्य – तीनों गांधीवादी तत्व शामिल थे।

गांधी और वैश्विक नेतृत्व के संवाद उदाहरण

- **बराक ओबामा**

2009 में नोबेल शांति पुरस्कार प्राप्त करते हुए बराक ओबामा ने कहाः

"सच्ची शांति केवल तनाव की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि न्याय की उपस्थिति है।"

यह विचार महात्मा गांधी के संवाद–दर्शन से गहराई से मेल खाता है, जहाँ संवाद का उद्देश्य केवल बाहरी शांति की स्थापना नहीं, बल्कि भीतरी और सामाजिक न्याय की पुनर्स्थापना होता है। गांधी के लिए संवाद का अंतिम लक्ष्य सद्भाव नहीं, बल्कि सत्य और न्याय के आधार पर टिका हुआ संतुलन था।

- **नेल्सन मंडेला**

"गांधी ने मुझे सिखाया कि विरोधियों को संवाद से सहयोगी कैसे बनाया जा सकता है।"

मंडेला के इस कथन में गांधी की संवाद कला का वैश्विक विस्तार दिखता है – संवाद के ज़रिए विरोध को पुल में बदल देना।

- **जैसिंडा अर्डर्न**

न्यूज़ीलैंड की प्रधानमंत्री ने कोविड–19 के समय संवाद को करुणा, पारदर्शिता और सहभागिता से जोड़ा। यह गांधीवादी संवाद का समकालीन प्रशासनिक उदाहरण है – जहाँ सरकार और जनता के बीच विश्वास संवाद के ज़रिए बना।

मीडिया संस्थानों की पुनर्रचना की आवश्यकता, शिक्षा, तकनीकी मंच और संवाद का नैतिक पुनर्निमाण

गांधीवादी संवाद का समावेश मीडिया में संभव है यदिः

- संवाद की भाषा में गरिमा हो
- आलोचना को स्थान मिले
- टीआरपी के बजाय सामाजिक ज़िम्मेदारी को तरजीह दी जाए
- संवाद का ध्येय 'आंदोलन' नहीं, 'संतुलन' हो

गांधीजी की 'नई तालीम' शिक्षा को संवाद का मंच मानती थी। आज शिक्षण संस्थान एकतरफा हो गए हैं – जहां शिक्षक बोलता है और छात्र मौन रहता है। ऐसे में गांधी का विचार, जहाँ संवाद से नैतिकता, आत्म–अनुशासन और सहभागिता उपजती है, अत्यंत प्रासंगिक है।

डिजिटल एम्पावरमेंट फाउंडेशन जैसे संगठन "डिजिटल स्वराज" अभियान के तहत सोशल मीडिया पर नैतिक संवाद की संस्कृति को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

भविष्य का संवादः एआई और मेटावर्स में गांधी का सवाल

जब संवाद कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मेटावर्स और वर्चुअल रियलिटी के आभासी आयामों में प्रवेश कर रहा है, तब प्रश्न यह है – क्या संवाद अब भी आत्मीय है?

गांधी होते तो शायद पूछतेः

"क्या आपकी तकनीक सत्य को उजागर करती है, या उसे छुपाती है?"

यह प्रश्न आज की तकनीक–प्रधान दुनिया के लिए मार्गदर्शक होना चाहिए।

भविष्य का संवादः निष्कर्षः 21वीं सदी की नैतिक आवश्यकता

गांधी का संवाद प्रचार नहीं, आत्ममंथन था। वह केवल तेज़ नहीं, टिकाऊ था। जब संवाद आज सत्ता, बाज़ार और भीड़ के हाथों में गिरवी है, तब गांधी हमें याद दिलाते हैं किः

- संवाद सत्य पर आधारित हो
- संवाद करुणा से जुड़ा हो
- संवाद का उद्देश्य समाज को जोड़ना हो

"संचार का उद्देश्य सत्ता नहीं, सत्य होना चाहिए।"

गांधी का संवाद हमें यही सिखाता है – और यही आज की सबसे बड़ी ज़रूरत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गांधी, मोहनदास करमचंद (1924), *यंग इंडिया, नवजीवन प्रकाशन.*
2. गांधी, मोहनदास करमचंद (1938), *हरिजन, नवजीवन प्रकाशन.*
3. ओबामा, बराक (2009), *नोबेल शांति पुरस्कार स्वीकृति भाषण, ओस्लो.*
4. मंडेला, नेल्सन (1995), *लॉन्ग वॉक टू फ्रीडम, लिटिल ब्राउन एंड कंपनी.*
5. यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइज़ेशन (यूनेस्को), *डिजिटल कम्युनिकेशन एंड द क्राइसिस ऑफ ट्रुथ, 2021.*
6. डिजिटल एम्पावरमेंट फाउंडेशन (2022), *डिजिटल स्वराज घोषणापत्र, www.defindia.org*
7. सेंटर फॉर ह्यूमेन टेक्नोलॉजी (2023), *रीइमेजिनिंग डिजिटल डायलॉग, www.humanetech.com*
8. अरविंद अग्रवालः *चम्पारण सत्याग्रह, महात्मा गांधी की प्रथम आहूति 2017*
9. अरविंद मोहन, *चम्पारण के सहयोगी, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, 2017*
10. अरविंद मोहन, *गांधी कथा, सेतु प्रकाशन, 2022*

♦❒♦